



UNIVERSITY OF CAMBRIDGE INTERNATIONAL EXAMINATIONS
International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE
NAME

CENTRE
NUMBER

--	--	--	--	--

CANDIDATE
NUMBER

--	--	--	--



HINDI AS A SECOND LANGUAGE

0549/01

Paper 1 Reading and Writing

May/June 2010

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.

Write in dark blue or black pen.

Do not use staples, paper clips, highlighters, glue or correction fluid.

DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

At the end of the examination, fasten all your work securely together.

The number of marks is given in brackets [] at the end of each question or part question.

For Examiner's Use	
Section 1	
Section 2	
Total	

This document consists of **12** printed pages.



अभ्यास 1 प्रश्न 1-6.

सदभाव का उत्सव 'फूल वालों की सैर' पर आलेख पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सदभाव का उत्सव 'फूल वालों की सैर' एक अनूठे मेले के रूप में चर्चित रहा है जिसका आयोजन अंजुमन-सैर-ए-गुल फरोशाँ नामक संस्था सन् 1961 से लगातार करती आ रही है। इस समारोह का आकर्षण हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिक सौहार्द का प्रतीक रंग-बिरंगा पंखा है जो हर साल उपराज्यपाल को पेश किया जाता है।

फूलवालों का काफ़िला लाल किले से इत्र और फूलों की सुगंध बिखेरता हुआ 32 किलोमीटर की दूरी तय करके महरौली स्थित कुतुब मीनार के करीब ख्वाजा बख्तियार काकी की मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाने हर साल आता है। दूसरे दिन परंपरागत ढंग से इसी मज़ार के समीप योगमाया महालक्ष्मी मंदिर में फूलों का छत्र चढ़ाया जाता है। इस मेले का समापन शनिवार को 'जहाज़ महल' में एक भव्य समारोह के साथ होता है। इस मौके पर रात भर कच्वाली और नृत्य के बीच जश्न का माहौल रहता है। पुरानी दिल्ली के निवासी मोहम्मद शम्सी कहते हैं कि "समय के साथ इस मेले की रौनक कम हो गई है। बस रस्म ही रह गई है। मैं यहाँ हर साल आता हूँ पर अब पहले वाला आनंद नहीं मिलता है।"

'फूलवालों की सैर' की शुरुआत अकबर शाह द्वितीय (1806-1837) के शासन काल में हुई। बादशाह अपने छोटे पुत्र मिर्जा जहाँगीर को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। ब्रिटिश रेजीडेंट सर सीटन ने इस बात को मंजूर नहीं किया। मिर्जा जहाँगीर ने खुले दरबार में उनका अपमान किया। एक दिन जब शाहज़ादा लालकिले में नौबतखाने पर मौज मना रहा था तभी वहाँ से सीटन हाथी पर गुज़रा। मिर्जा जहाँगीर ने उस पर गोली चलाई।

रेजीडेंट तो बच गया, लेकिन उसका सेवक मारा गया। इसी आरोप में शाहज़ादे को इलाहाबाद के लिए निर्वासित कर दिया गया। उनकी माँ ने उसी समय अपने बेटे के बरी होने पर ख्वाजा बख्तियार काकी के मज़ार पर फूलों की चादर चढ़ाने की मन्नत मानी और फिर अपने बेटे की रिहाई पर फूलों की चादर चढ़ा कर अपनी मन्नत पूरी की। दिल्ली के हिंदुओं ने योगमाया मंदिर में भेंट चढ़ाकर अपनी भागीदारी निभाई। यह तीन दिनों का समारोह इतना शानदार रहा कि बादशाह ने इसे हर साल मनाने का ऐलान किया। 1942 में अंग्रेजों ने इसे बंद कर दिया लेकिन 1961 में अंजुमन सैर-ए-गुलफरोशाँ की कोशिश से यह दोबारा शुरू हुआ और तब से आज तक यह सिलसिला जारी है।

1 फूलवालों की सैर किस भावना का प्रतीक है?

..... [1]

2 फूलवालों का काफ़िला कहां पहुंचता है?

..... [1]

3 'जहाज महल' का क्या महत्त्व है?

..... [1]

4 मिर्जा जहाँगीर ने सर सीटन पर गोली क्यों चलाई?

..... [1]

5 मिर्जा जहाँगीर के बरी होने की मन्नत को कैसे पूरा किया गया?

..... [1]

6 इस मौके पर हिंदुओं ने क्या किया?

..... [1]

[अंक: 6]

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय,

शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

दूरभाष 27349845, 27345984

असाधारण बच्चों से आवेदन पत्र आमंत्रित

शिक्षा, कला, संस्कृति तथा खेलकूद आदि क्षेत्रों में असाधारण उपलब्धियों के लिए 4 वर्ष से 15 वर्ष की आयु के बच्चों को राष्ट्रीय स्तर पर चयनित करने हेतु आवेदन पत्र आमंत्रित किये जा रहे हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर चयनित बच्चों को 20 हजार रुपये नकद, एक प्रतीक चिन्ह एवं स्वर्ण पदक देकर सम्मानित किया जाएगा।

इस संबंध में सभी जिला कलक्टरों को पत्र भेजकर कहा गया है कि वे राष्ट्रीय पुरस्कार के लिए अपने जिले के प्रतिभावान बच्चों के नाम की अनुशंसा करें।

यह अनुशंसा निम्नलिखित विभागों से की जा सकती है।

1. निर्वाचित संस्थाओं के प्रतिनिधि
 2. सांसद व विधायक
 3. प्रतिष्ठित स्वैच्छिक संगठन
- सीधे ही महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली को अनुशंसा 31 जुलाई, 2010 तक भेज सकते हैं।

लक्ष्मी गोविंद की उम्र 14 वर्ष है। वह कानपुर में रहती है। उसने दसवीं कक्षा की परीक्षा में 82 प्रतिशत अंक लेकर पूरे राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। इंद्राविहार के 52 नंबर मकान में वह पिछले पाँच वर्षों से रह रही है। उसका टेलिफोन न. 55234579 है। वह विज्ञान, इतिहास और साहित्य की परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक अर्जित करने के साथ ही गणित में पूरे 100 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली छात्रा है। लक्ष्मी गोविंद नृत्य में विशेष रुचि लेती है और 8 वर्ष की आयु से कथक सीख रही है।

लक्ष्मी गोविंद ने यह विज्ञापन देखा और वह इस पुरस्कार के लिए आवेदन करना चाहती हैं।

आप अपने को लक्ष्मी गोविंद मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

For
Examiner's
Use

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय,

शास्त्री भवन, नई दिल्ली 110001

दूरभाष 27349845, 27345984

आवेदक का नाम.....लक्ष्मी गोविंद.....

आयु -

स्थायी पता

.....

दूरभाष

असाधरण श्रेणी चुनिए

शिक्षा कला संस्कृति खेलकूद

असाधरण कार्य का विवरण

.....
.....
.....
.....

[उलटै: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 8-11

ध्वनि प्रदूषण पर निम्नलिखित लेख पढ़िए।

अगले पृष्ठ पर दिए गए कार्य को निर्देशानुसार पूरा कीजिए।

ध्वनि प्रदूषण

शोर एक अनचाही ध्वनि है। जो ध्वनि कुछ को अच्छी लगती है वही दूसरों को नापसन्द हो सकती है। यह विभिन्न घटकों पर आधारित होती है। प्राकृतिक वातावरण हवा, समुद्री जानवरों, पक्षियों की स्वीकार युक्त आवाजों से भरा होता है। मनुष्य द्वारा निर्मित ध्वनियों में मशीन, कारें, रेलगाड़ियाँ, हवाई जहाज, पटाखे, विस्फोटक आदि शामिल हैं। जो कि ज्यादा विवादित हैं। दोनों तरह के ध्वनि प्रदूषण, नींद, श्रवण, संवाद को ही नहीं यहाँ तक की शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करते हैं।

यह सिद्ध हो गया है कि ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण का महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिसे पहले वस्तुजनित प्रदूषण का हिस्सा माना जाता था। ध्वनि प्रदूषण अब औद्योगिक पर्यावरण का अनिवार्य अंग है जो कि औद्योगिक शहरीकरण के बढ़ने के साथ बढ़ता ही जा रहा है। यहाँ तक की गैर औद्योगिक क्षेत्रों में भी छपाई रंगाई की मशीन, कारों की मरम्मत, ग्राइंडिंग आदि कार्यों से आस-पास के वातावरण से शोर पैदा होता रहता है। यह शोर न केवल चिड़चिड़ाहट, गुस्सा पैदा करता है बल्कि धमनियों में रक्त संचार को बढ़ाकर कर हृदय की धड़कन को तीव्र कर देता है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि बढ़ता शोर स्नायविक बीमारी, नर्वसब्रेक डाउन आदि को जन्म देता है।

शोर, हवा के माध्यम से संचरण करता है। ध्वनि की तीव्रता को नापने की निर्धारित इकाई को डेसीबल कहते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि 100 डेसीबल से अधिक की ध्वनि हमारी श्रवण शक्ति पर असर डालती है। मनुष्य को न्यूरॉटिक बनाती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 45 डेसीबल की ध्वनि को, शहरों के लिए आदर्श माना है। बड़े शहरों में ध्वनि का माप 90 डेसीबल से अधिक हो जाता है। मुम्बई संसार का तीसरा, सबसे अधिक शोर वाला नगर है। दिल्ली ठीक उसके पीछे है।

आपके स्कूल में प्रदूषण रोक दिवस मनाया जा रहा है। इस अवसर पर आपको एक भाषण तैयार करना है। अपने भाषण के लिए ध्वनि प्रदूषण नामक लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत टिप्पणियां लिखें जिसपर आपका भाषण आधारित हो

8 विभिन्न ध्वनियों के प्रकार

(i) [1]

(ii) [1]

9 ध्वनि प्रदूषण फैलने के कारण

(i) [1]

(ii) [1]

10 ध्वनि प्रदूषण के दुष्प्रभाव

(i) [1]

(ii) [1]

11 भारत का सर्वाधिक ध्वनि प्रदूषित शहर

..... [1]

[अंक:7]

अभ्यास 4 प्रश्न - 12

निम्नलिखित आलेख के आधार पर सारांश लिखिए और बताइए कि क्या सचमुच मशीनें सारी तकलीफें दूर कर सकती हैं? आलेख की मुख्य बातों को अपने शब्दों में लिखिए।

आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

संगत बिन्दुओं के समावेश पर 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

मशीनें सारी तकलीफें दूर नहीं कर सकती

हमारे अनुभव तथा भावनाएँ मूल रूप से हमारे शरीर तथा मन पर निर्भर होती हैं। रोजमर्रा की जिंदगी के अनुभव के आधार पर हम यह जानते हैं कि मन की खुशी लाभदायी होती है। उदाहरण के लिए दो अलग-अलग आदमी एक ही तरह के दुख को झेलते हैं, परंतु उनमें से एक अपने मन की शक्ति की वजह से उस दुख का सामना अधिक आसानी से कर सकता है। मेरे विचार में ऐसा सोचना गलत है कि मशीनें आदमी की सभी तकलीफें दूर कर सकती हैं। बेशक आरामदायी चीजें बहुत उपयोगी हैं, पर साथ-साथ यह भी स्वाभाविक है कि हमारी सभी समस्याएँ केवल इन भौतिक सुख-सुविधाओं की वस्तुओं से दूर नहीं हो सकती। भौतिक वस्तुओं से भरे समाज में अधिक नहीं तो उतनी ही मानसिक अशांति और निराशा है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आखिरकार हम मनुष्य हैं। हम मशीनों से नहीं बने और हमारे शरीर मशीनों से अलग हैं। इसलिए हमें अपनी आंतरिक क्षमताओं और गहरे जीवन-मूल्यों के प्रति गंभीरता से सोचना चाहिए। मेरा यह विश्वास है कि यदि कोई सुखी जीवन चाहता है तो आंतरिक और बाहरी दोनों ही बातों की ओर, दूसरे शब्दों में भौतिक और मानसिक विकास की ओर ध्यान देना आवश्यक है। हम आध्यात्मिक विकास की भी बात कर सकते हैं, परंतु जब मैं आध्यात्मिक कहता हूँ तो मेरा मतलब किसी खास धर्म से नहीं है। जब मैं आध्यात्मिक बल की बात करता हूँ तो मेरा मतलब मनुष्य के अच्छे गुणों से है। ये गुण जन्म से मिले हुए हैं। ये सब हमारे जीवन में बाद में नहीं आते। धर्म के प्रति विश्वास बाद में आता है। सभी धार्मिक उपदेश हमें एक अच्छा आदमी बनने की सलाह देते हैं। ये उपदेश हमारे जन्मजात अच्छे गुणों को और शक्तिशाली बनाते हैं। हम सभी के अंदर सृजन करने का एक बहुत ही सहज गुण होता है, जिसकी पहचान बहुत ही ज़रूरी है।

अभ्यास 5 प्रश्न 13-19

भारतीय मसालों पर लिखे इस आलेख को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

एक लोककथा है कि एक वैद्यजी थे। उनके बगल के घर में नगरश्रेष्ठि विराजते थे। दोनों घरों के बीच साझा दीवार होने से उधर की बातें इधर और इधर की बातें उधर कानों में पड़ना स्वाभाविक था। जाड़े के दिन थे। शाम का खाना जीमने बैठे नगरश्रेष्ठि को वैद्यजी ने कहते सुना कि उन्हें एक कटोरा भर दही भी दिया जाए। वैद्यजी ने बहू से कहा, जाड़े की शाम को कटोरा भर दही दिया जाए। इतना सुनकर वैद्यजी ने अपनी बहू से कहा “जाड़े की शाम को एक कटोरा भर दही खाकर नगरश्रेष्ठि सर्दी और खांसी को निमंत्रण दे रहे हैं। देखना कल ही मुझे उनके इलाज से इतने पैसे मिलेंगे कि तेरे कंगन की जोड़ी पक्की”।

बहू उमंग से उछलती भीतर चली गई। तभी सेठानी की आवाज आई। परसने वाली से उन्होंने कहा कि सेठजी के दही में वह अच्छी चुटकी काली मिर्च, भुने जीरे और काले नमक की बुकनी डालना न भूले, हाँ .. । इतना सुनकर वैद्यजी का चेहरा उतर गया और वे बहू से बोले “अब तो सालभर तक तेरे कंगन बनने से रहे”।

इसी प्रकार हमारे यहाँ घर-घर में रसोई को रससिद्ध बनाने वाले मिर्च-मसालों से जुडी मनोरंजक गाथाएं हमारी लोककथाओं, पुराणों और इतिहास में यहाँ से वहाँ तक विराजमान हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक फैले विशाल देश में खान पान में जो विविधता है वही विविधता मसालों के प्रयोग में भी है। हमारी भाषा और साहित्य की ही तरह हमारे मसाले भी भारतीय और गैर भारतीय तत्वों का एक मिला-जुला खजाना है। उदाहरण के लिए ईसा की पहली सदी तक दक्षिण भारत में चीन से चीनी आती थी। शेष भारत शहद और गुड से काम चलाता था। फिर धीरे-धीरे चीनी का ऐसा चस्का उत्तर को भी लग गया, कि वहाँ चीनी के स्वरूप में सुधार भी होने लगे। चाय की ही तरह चीन से दालचीनी आई तो कपूर और राई भी आए। दक्षिण भारत में कपूर को आज भी ‘चीन कर्पूर’ कहते हैं।

मेथी दाना आयुर्वेद की राय में मधुमेह रोगियों के लिए उत्तम दवा है। जिसका प्रयोग जेवनारों में दिव्य सद्भिजायां या जाड़ों के मेथीपाक जैसे व्यंजन बनाने में सहायक होता है। मेथी भी सदियों पूर्व भारत में यूनान के व्यापारियों के साथ भारत आया। बंगाली खाने की जान पंचफोडन (यानी मेथी, सौंफ, जीरा, पीली सरसों और कलौंजी इन पांच मसालों के मिश्रण) में भी मेथी विराजमान है। पंचफोडन के दो अन्य मसाले सौंफ और जीरा भी भूमध्यसागरीय क्षेत्र से ही भारत आए। अचार, चटनी, मुरब्बे के अलावा उदर रोगों के लिए भी सौंफ का एक शीतलता देने वाले मसाले के रूप में प्रयोग होता है। इसी प्रकार जीरे का प्रयोग भारत के सभी प्रांतों में बहुलता से होता है। इसको पाचन क्रिया में मददगार और फ़ितरत (स्वभाव) से गर्म बताया गया है। औषधि के रूप में इसके प्रयोग का वर्णन आयुर्वेदज्ञ चरक ने अपनी पुस्तक ‘चरक संहिता’ में किया है। शल्य चिकित्सक सुश्रुत ने भी दवा के रूप में इसे उपयोगी बताया है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही और गलत का निशान लगाकर दीजिए।

यदि वाक्य गलत है तो पाठान्त के आधार पर वह वाक्य भी लिखिए जिससे वाक्य सही साबित होता है।

सही गलत

उदाहरण - वैद्यजी का घर नगरश्रेष्ठि के घर के सामने था।

<input type="checkbox"/>	<input checked="" type="checkbox"/>
--------------------------	-------------------------------------

औचित्य - वैद्यजी के बगल के घर में नगरश्रेष्ठि रहते थे।

13 दोनों घरों के बीच एक जैसी दीवारें थीं।

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
--------------------------	--------------------------

14 वैद्यजी ने अपनी बहू से कहा कि नगरश्रेष्ठि जाड़े की शाम को दही खाकर बीमारी को बुलावा दे रहे हैं।

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
--------------------------	--------------------------

15 वैद्यजी आश्वस्त थे कि कल ही उन्हें बुलावा आएगा।

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
--------------------------	--------------------------

16 सेठजी ने आवाज़ देकर काली मिर्च, काला नमक और जीरे की बुकनी डालने के लिए कहा।

<input type="checkbox"/>	<input type="checkbox"/>
--------------------------	--------------------------

17 वैद्यजी ने यह क्यों कहा कि अब तेरे कंगन सालभर तक नहीं बनेंगे?

[1]

18 भारतीय मसालों की तुलना भारतीय भाषा और साहित्य से क्यों की गई?

[1]

19 खाने के अलावा मेथी और सोंफ का प्रयोग किस लिए किया जाता है?

[2]

[अंक:10]

